Social Science

Special Issue

"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

वैश्विक साझेदारीः आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए भारत की सहयोगात्मक पहल

डॉ॰ प्रवेश कुमार[1] और श्रीमति कुसुम[2]

[1] विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थिनी, शिक्षा शास्त्र, महात्मा ज्योतिबाफुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: डॉ॰ प्रवेश कुमार

सारांश

विविधता में एकताः जैसा कि हम जानते हैं कि भारत विविधता में एकता के लिए विश्व पटल पर जाना जाता है। भारत शब्द और भावना दोनों में बहुवचन है। विविधता में एकता का अर्थ है कि विभिन्न जातियों और समुदायों के लोगों की संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं का एक भव्य मिश्रण जिसने कई विदेशी आक्रमणों के बावजूद अपनी एकता और एकजुटता को बरकरार रखा है।

तीव्र आर्थिक और सामाजिक असमानताओं के बावजूद एकता और अखंडता कायम रखी गई है। यह वह मिश्रण है जिसने भारत को संस्कृति की एक अनूठी मिशाल बना दिया है। इस प्रकार, भारत एक एकीकृत सांस्कृतिक संपूर्ण ढांचे के भीतर बहुसांस्कृतिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है।

'एकता' शब्द का अर्थ एकीकरण है, जो 'हम–पन'' के सार पर जोर देता है। विविधता में एकता का मूल अर्थ है 'एकरुपता के बिना एकता' और ''विखंडन के बिना विविधता''।

बहुपक्षीय सहयोग से तात्पर्य है कि कई देशों या देशों के समूहों के बीच एक कानूनी समझौता है, जो उदारीकृत दरों पर सदस्य देशों के बीच विभिन्न वस्तुओं, मूलभूत आवश्यकताओं और सेवाओं के आदान–प्रदान को बढ़ाने के लिए एक साथ एक मंच पर नियमानुसार आपसी सहयोग करना होता है।

हाल के पिछले कुछ वर्षों से भारत लगातार एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, और जी–20 की भगीदारी में इसका नेतृत्व विश्व मंच पर इसके बढ़ते प्रभाव का साश्वत प्रमाण है। भारत दुनिया का प्रथम सबसे अधिक आबादी वाला देश है, जो एक विशाल और गतिशील श्रम शक्ति प्रदान करता है। इसके आर्थिक विकास, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दिया है, जिससे भारत वैश्विक स्तर पर निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है।

भारत अपने मित्र राष्ट्रों और अन्य सहयोगी राष्ट्रों के साथ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, तकनीकि, वैज्ञानिक, स्वथ्य सेवाओं आदि के आदान–प्रदान के लिए हमेशा तत्पर है। जी–20 सम्मेलन की अध्यक्षता इसका जीवन्त उदाहरण है।

मूलशब्दः एक जुटता, आर्थिक सहयोग, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सहयोग, स्वस्थ्य सुरक्षा व रक्षा सहयोग।

परिचय

विविधता में एकता को बिना किसी भेदभाव के भाईचारे की भावना के रूप में परिभाषित किया गया है। ''अनेकता में एकता'' शब्द का तात्पर्य बहुत सारी विविधता होने के बाद भी एकता या एकजुटता की भावना से है। इसकी भावना लोगों को एक साथ जोड़ती है और यह बन्धन मानवता का मार्ग दिखाता है। यह विविधता धर्म, रंग, जाति, पंथ, सांस्कृतिक प्रथाओं आदि के रूप में हो सकती है।

भारत विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता है। 5000 वर्षों की इस लंबी यात्रा में हम पर अलग–अलग धर्मों और संस्कृतियों से सम्बन्ध रखने वाले कई शासकों ने शासन किया। इसके अतिरिक्त बहुत सारे लोग दूसरे देशों से आए और भारत ने उन्हें खुले दिल से स्वीकार किया इस आदान–प्रदान के कारण भी सामाजिक जीवन के विभिन्न स्तरों में विविधता को जन्म दिया जिसे भारतीय संस्कृति ने सद्भाव से स्वीकार किया।

विविधता में एकता की भावना को समझने के लिए हम अपने इतिहास से एक सुनहेरा उदाहरण प्रस्तुत कर इसे समझ सकते हैं– जब भारतीय विभिन्न शासकों के शासन के पश्चात् अंग्रेजों की लम्बी गुलामी से छुटकारा पाने के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष के सभी समाज और समुदायों के लोग भिन्न–2 गुटों और समूहों में बँट गये इन सभी समूहों का उद्देश्य अंग्रेजों की दास्ता से भारत माता को स्वतन्त्र कराना था। विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों का स्वतन्त्रता पाना ही एक उद्देश्य था समकालीन भारतीयों की यही भावना विविधता में एकता की विचारधारा को इंगित करती है।

विविधता को तब ही समझा जा सकता है जब प्रथाऐं, आपसी सद्भाव, मानवता, संस्कृति और प्राकृतिक वातावरण के परस्पर व्यक्तियों में सम्मान का गुण हो। भारत की विविधता दुनिया में अद्वितीय है। सबसे बड़ी आबादी वाला देश होने के साथ यहाँ कई भाषाऐं संस्कृतियों, धर्मों, कई सामाजिक विशेषताएं और भौगोलिक अन्तर होने के बावजूद एकता के एक अटूट सूत्र से बन्धे हैं। सभी विविधताओं में है एकता यही तो है हमारे भारत की विशेषता। भारत अपनी इस विविधता के खज़ाने को प्राचीन काल से बनाये हुए हैं।

प्रारम्भिक प्रयास

भारतीय संविधान को लिखने से पहले समकालीन अन्य देशों के संविधानों का गहन अध्ययन किया गया और अपने देश के आन्तरिक ढांचे को ध्यान में रखते हुऐ वृहत और अद्वितीय संविधान की रचना हुई। इसमें भारतीय समाज के सभी वर्गों, उपवर्गों और वंचितों की विविधता को एकता की भावना में संजोया गया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ही भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं। आजादी के पश्चात् देश के हालात बहुत अस्त–व्यस्त थे विकास की धारा से परे था। लोगों के जन–जीवन को सुधारने के लिए समकालीन सरकारों ने समाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और भौगालिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को बढ़ाने और निभाने का प्रयास शुरू किया। समय के साथ–साथ भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास की धारा से जुड़ता गया। विभिन्न सरकारें देश हित में भिन्न–भिन्न देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों को स्वीकार करके देश की विकासधारा को सुदृढ़ करती रही हैं।

नवीन पहल

वर्तमान समय में भारत विश्व में एक अपना विशेष स्थान रखता है। वर्ष 2014 के बाद से भारत के अन्य नए देशों के साथ सम्बन्ध और समझौते मजबूत हुए हैं। जिससे भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास की मुख्य धारा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। डिजिटलीकरण और बुनियादी ढांचे जैसे प्रमुख क्षेत्रों में आर्थिक सुधारों के कारण भारत वैश्विक विकास में 16 प्रतिशत से अधिक योगदान कर रहा है। सरकार के पिछले नौ वर्षों के कार्यकाल में त्वरित संरचनात्मक सुधारेां के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था प्रभावशाली ढंग से बढ़ी है कोविड–19 महामारी और उसके बाद की वैश्विक राजनीतिक चुनौतियों के बावजूद वर्तमान सरकार के दूरदर्शी फैसलों और विवेकपूर्ण कार्यवाई ने भारत की आर्थिक स्थिरता को मजबूत किया है। दुनिया भर में अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार हुआ है तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत के आर्थिक विकास को सराहा है।

राष्ट्रीय विकास धाराऐं

भारत के आर्थिक बुनियादी सिद्धान्तों की मजबूती के साथ–साथ मानव विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। नीति आयोग के अनुसार पिछले नौ वर्षों में लगभग 25 करोड़ भारतीय गरीबी से बाहर आ गए हैं और गरीबी दर में गिरावट आई है, जो 2013–14 में 29.17 प्रतिशत से घटकर 2022–23 में 11.28 प्रतिशत रह गई है। स्मार्ट सिटी मिशन के अन्तर्गत बढ़ती शहरी आबादी के लिए भौतिक, संस्थागत, सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे का व्यापक विकास करना है और स्थानीय विकास को सक्षम करने और प्रौद्योगिकी की मदद से नागरिकों के लिए बेहतर परिणामों के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने तथा आर्थिक विकास को गति देने हेतु भारत सरकार द्वारा एक अभिनव और नई पहल है। इसके अन्तर्गत 100 शहरों को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या एक समान मापदंड के आधार पर राज्यों के बीच वितरित किया गया है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बुनियादी सुविधाओं के तत्वों को सुनिश्चित किया जायेगा जैसे–

- पर्याप्त जलापूर्ति
- निश्चित विधुत आपूर्ति
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सहित स्वच्छता
- कुशल शहरी गतिशीलता और सार्वजनिक परिवहन
- किफायती आवास, विशेष रूप से गरीबों के लिए
- सुदृढ़ आई टी कनेक्टिविटी और डिजिटलीकरण
- सुशासन विशेष रूप से ई–गवर्नेस और नागरिक भागीदारी
- टिकाऊ पर्यावरण
- नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षण, विशेष रूप से महिलाओं, बच्चो एवं बुजुर्गों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा।

वर्तमान सरकार अपने नागरिकों के चहुँमुखी विकास की विचारधारा पर कार्य कर रही है विभिन्न योजनाओं और सेवाओं के माध्यम से जनकल्याण के मार्ग पर तीव्र गति से प्रयासरत है। स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्तीय एवं आर्थिक, कृषि, व्यावसाय, रोजगार और मूलभूत आवश्यकताओं की राष्ट्रीय स्तर पर पूर्ति करना सरकार का प्रथम उद्देश्य है।

सरकार अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी इसी विचारधारा के साथ मित्र राष्ट्रों और सहयोगी राष्ट्र समूहों के परस्पर खड़ी है।

जी–20 (20 देशों का समूह) की सदस्यता भारत के आर्थिक विकास के लिए मील का पत्थर साबित हुई है। भारत दिसम्बर 2022 में जी–20 की अध्यक्षता ग्रहण की है जिसके द्वारा वर्ष 2023 में देश के पचास शहरों में 200 बैठकें हुई। विदेशी प्रतिनिधियों और मेहमानों को भारत के शहरों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक देखने को मिली जिससे दुनिया को भारत की ''विविधता में एकता'' के दर्शन हुए और साथ ही ''वसुधैवे कुटुंबकम'' जिसका अर्थ है कि पूरी दुनिया एक परिवार है कि विचार धारा के साक्षात दर्शन भी हुए हैं। इसके आयोजन से दुनिया को यह सन्देश मिला है कि दुनिया एक परिवार है और आपसी समझ और सहयोग से जलवायु परिवर्तन, महामारी, खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा और आतंकवाद जैसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से लडने और सुलभ समाधान में सहायता मिलेगी।

अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत के सम्बन्ध

यह एक शक्तिशाली संदेश है जिससे हमारे भीतर एक चिंगारी प्रज्वलित करने और वैश्विक ज्ञान और शन्ति पैदा करने की क्षमता है क्योंकि हम वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर कई चुनौतियों का समाना कर रहे हैं इसलिए मानवता के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है राष्ट्रों और लोगों के बीच एकता की कमी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को मजबूत करने में आने वाली सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक है। अंहकार अक्सर मानवता पर हावी हो जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप, संघर्ष, युद्ध और अन्य प्रकार की हिंसाओं का जन्म होता है। जिनसे देश और मानवता का नाश होता है। इससे सवाल यह उठता है कि हम वैश्विक स्तर पर खुद को एक परिवार के रूप में क्यों नहीं देख सकते?

संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सदस्यों के रूप में भारत संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और सिद्धान्तों का दृढ़ता से समर्थन करता है। चार्टर के लक्ष्यों को लागू करने और संयुक्त राष्ट्र के विशेष कार्यक्रमों और एजेंसियों का विकासात्मक सहयोग में महत्वपूर्ण योगदान है। इस नई बहुध्रुवीय दुनिया में, भारत स्पष्ट रूप से एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरा है। हालांकि इस बात पर अलग–अलग परिदृश्य हैं कि क्या भारत विकास दर के मामले में चीन से आगे निकल जाएगा? लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारत इस सदी की शक्तियों में से एक होगा।

वर्तमान में हो रहे आर्थिक पतन से मानवता के विनाशकारी परिणामों से बचने के लिए दुनिया के अन्य देश आपसी सद्भाव और मित्रता की ओर अग्रसर हो रहे हैं जिससे मूल भूत आवश्यकताओं की मदों का आदान–प्रदान होगा और मानव जीवन समवृद्धि की ओर अग्रसर होगा। फरवरी 2022 में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका (ब्रिक्स) और संघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में एक संयुक्त व्याख्यान में नई बहुध्रुवीय व्यवस्था के उदय की घोषणा की गई है। इसी सम्बन्ध में बहुध्रुवीय दुनिया में प्रमुख और मध्य शक्तियाँ भी अपने अलग दृष्टिकोण पर विचार कर रही हैं। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध परिणामों ने दुनिया के अन्य देशों के आपसी सम्बन्धों

और सहयोग के सम्बन्ध में दृष्टिकोण में बदलाव हुआ है।

भारत बहुध्रुवीय विश्व के लिए अन्यों के समक्ष सबसे अधिक प्रतिबद्ध प्रतीत होता है और खुद को विकासशील दुनिया के एक मजबूत नेता के रूप में चित्रित किया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत एक बहुध्रुवीय विश्व को आकार देने का प्रयास करता है जो महान शक्ति की राजनीति को खारिज करता है और आज की विविधता को दर्शाता है और समावेशी सहयोग पर निर्भर करता है।

हम वैश्विक स्तर पर एक परिवार के रूप में अनुसंधान और विकास के लिए स्थायी औद्योगिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में सभी के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए उन्नत तकनीक, बेहतरीन, रचनात्मक और कम लागत वाले जीवन उपयोगी संसाधन और समाधानों के मिश्रित भोजन की विशिष्ट कला के ज्ञान को साझा करके अपने सहयोगी देशों के लिए मानव जीवन के कल्याण में सहायता पहुँचायी हैं।

इसके अतिरिक्त हाल के वर्षों में हमने कम लागत वाली और कुशल नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, नवीन जल संचयन तकनीकों को विकसित करने या ग्रीन फार्मा से स्वास्थ्य समाधान खोजने तक। हमने अपनी उपलब्धियों को सहयोगी राष्ट्रों के साथ साझा किया है। वित्तीय वर्ष 2019–20 में अन्तर्राष्ट्रीय विकास सहयोग के लिए भारत की प्रतिबद्धता 1.32 विलियन अमेरिकी डॉलर रही, जो पिछले तीन वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है। हालाँकि यह आवंटन भारत के कुल बजट के 1 प्रतिशत से भी कम है, फिर भी यह उच्च आय वाले देशों जैसे ऑस्ट्रेलिया (2.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर, सकल घरेलू उत्पाद का 0.22 प्रतिशत), दक्षिण कोरिया (2.5 विलियन अमेरिकी डॉलर सकल घरेलू उत्पाद का 0.15 प्रतिशत) की तुलना में भारत का एक महत्वपूर्ण योगदान है और ऑस्ट्रिया (1.2 अरब अमेरिकी डॉलर, सकल घरेलू, उत्पाद का 0.27 प्रतिशत) भारत की 2 अरब अमेरिकी डॉलर की क्रेडिट लाइनों पर विचार करते हुए। भारत ने वित्तीय वर्ष 2015–16 में अमेरिकी डॉलर की प्रतिबद्धताओं के साथ अपना अब तक का सबसे अधिक विदेशी सहायता बजट देने का बादा किया है।

वर्तमान में भारत के विकास सहयोग उद्देश्य मुख्यतः दक्षिण–दक्षिण सहयोग (South-South Cooperation SSC) ढांचे पर आधारित है जो कृषि विकास, मानवाधिकार, शहरीकरण, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसे क्षेत्रों पर सहयोग करने के लिए वैश्विक दक्षिण में विकासशील देशों के बीच एक तकनीकि सहयोग का सम्पूर्ण प्रयास किया जा रहा है। इस समूह के लोगों और देशों के बीच एक जुटता की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है भारत अपने सहयोगी राष्ट्रों के प्रति वैश्विक स्तर पर सहयोग के लिए परस्पर तटसथ है।

विदेश मंत्रालय जी–20, ब्रिक्स, एससीओ से विभिन्न बहुपक्षीय मंचों के तहत अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रहा है। उनके हितों की रक्षा करने और भारतीयों के लिए व्यापार के अवसरों को खोजने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास जारी है।

पिछले वर्ष–2023 में भारत गणराज्य ने जी–20 सम्मेलन की अध्यक्षता का दायित्व बाखूवी निभाया। जी–20 सदस्यों में जी–8 देश भी शामिल हैं, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, कनाडा और रूस तथा 11 उभरते और विकासशील देश, अर्थात् अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की तथा यूरोपियन यूनियन। यहाँ मुख्य बात यह है कि जी–20 के सदस्य देश विश्व का सकल घरेलू उत्पाद का 80 प्रतिशत से अधिक, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत और विश्व की सम्पूर्ण जनसंख्या का 60 प्रतिशत हिस्सा रखते हैं। विदेश मन्त्रालय 2016 से जी–20 डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप के लिए विभिन्न कार्य समूह और मन्त्रिस्तरीय बैठकों में भारत के सहयोगी रूख को प्रस्तुत कर रहा है। जिससे भारत अपने सहयोगी सदस्य राष्ट्रों का सार्वभौमिक विकास और मूल भूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग करता है जिससे भारत का परचम वैश्विक स्तर पर लहरा रहा है।

भांघाई सहयोग संगठन

एक अंतरसरकारी संगठन है और इसमें आठ सदस्य देश (चीन, भारत, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्वेकिस्तान) शामिल हैं। इस संगठन का मूल उद्देश्य सदस्य देशों के बीच विश्वास के स्तर और पड़ोसी व्यवहार को उन्नति की ओर बढ़ाना है और तकनीकी, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तरों पर कुशल व्यवहार व सहयोग बढ़ाने के साथ–साथ परिवहन, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, ऊर्जा और पर्यटन जैसे अन्य क्षेत्रों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देकर अपनी–अपनी अर्थव्यवसथा को मजबूत करना है। भारत का इतिहास गवाह है हमेशा से हम सप्रेम सभी से सहयोगात्मक भेंट करते आये हैं सम्पूर्ण विश्व के देशों, राज्यों और मानव जाति को मानव हित के प्रति जागरूक होकर अंहकार त्याग कर जनकल्याणकारी रीति–नीति को अपना कर जीवन व्यतीत करना ही सबसे सरल और उचित मार्ग है जो शान्ति और एकता को जन्म देगा।

वैश्विक एकता प्राप्त करने में मुख्य बाधाओं में से एक अहंकार है। हम अक्सर अपने निजी हितों को मानवता के हितों से ऊपर रखते हैं, जिससे आपसी सहयोग और समझ की कमी हो जाती है हमें यह पहचानने की जरूरत है कि हमारा अहंकार हमारे अस्तित्व का थोड़ा सा हिस्सा है हमें उससे परे देखने की आवश्यकता है। हमें व्यापक जनहित में भलाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और एक स्थायी दुनिया बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए जहां सभी को सयम अपने जीवन यापन के सयम समान प्राप्त हो सकें।

विविधता में एकता

बहुपक्षीय सहयोग में भारत पर विचार व्यक्त करने के बाद हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भारत विभिन्न धर्मों और प्रथाओं वाला एक विशाल देश है। कहावत है कि पग–पग पर बदले पानी एक कोस पर वाणी। पूरे देश में क्षेत्रानुसार पोशाक और शारीरिक बनावट भी बदली जाती है। इन सभी विविधताओं के बावजूद, सुन्दरता इस तथ्य में निहित है कि विविधता में एकता निहित है। मत भेद हो सकते हैं लेकिन सभी का ध्यान अपने देश के विकास पर केंद्रित है। पूरा देश ईद, दिपावली और 30 अन्य प्रमुख त्यौहारों पर सब एक साथ छुट्टियाँ मनाते हैं। इन त्योहारों के दौरान हिन्दू और मुस्लिम उपहार और मिठाईयों का आदान–प्रदान करते हैं। यह भारत में विविधता को एकता में दर्शाते हैं।

इसी विचार धारा के साथ हमारा भारतवर्ष अपने सहयोगी राष्ट्रों के साथ किये गये अनुबन्धों को विनम्र हृदय से जनकल्याण के लिए उनके साथ परस्पर अडिग खड़ा है।

पुरानी कहा है कि एक जुट होकर खड़े रहते हैं, विभाजित होने पर हम गिर जाते हैं इसलिए एक देश एक रूप में, हमें एक जुट रहने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम दूसरों के हमले के प्रति कम संवेदनशील हो जाएं।

सन्दर्भ

1. हर्ष वी. पंत ''भारतीय विदेश नीति और इसकी आकांक्षाएं: संस्थागत डिजाइन मामले, आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 2020 दिसम्बर 16।
2. भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग, विदेश मन्त्रालय।
3. रानी डी0 मुलेन, ''भारतीय विकास सहयोग ने गति पकड़ीं''।

4. ए. अप्पादोराई, बांडुग सम्मेलन, नई दिल्ली, भारतीय विश्व मामलों की परिषद, 1995 अक्टूबर।
5. भारतीय विकास निगम अनुसंधान, आईडीसीआर रिपोर्टः भारतीय विकास सहयोग राज्य, नीति अनुसंधान केन्द्र, 2014, 1।
6. मंलंचा चक्रवर्ती, ''भारत विकास सहयोग– क्या हमें यह सही मिल रहा? ''आऑब्जर्जर रिसर्च फाउंडेशन, 2019 नवंबर 22।
7. अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग के लिए एक भारतीय अतः दृष्टिकोण, ''जिंदल जर्नल ऑफ पब्लिक, पॉलिसी, वॉल्यूम 3, अंक 1।
8. अमिताभ मट्टू और अमृता नालींकर, ''भारत की मदद से बहुपक्षबद को पुनजोबित करना।'' द हिन्दु, 2020 मई 7।
9. पटेल स्नेहा, भारत की जी–20 अध्यक्षताः एक सार्वजनिक कूटनीति परिप्रेक्ष्य।
10. कुलकर्णे, वेदान्त– India peace, multilateralism] and Inclusive development.
11. इन्टरनेट एवं अन्य लेखकों के अध्ययन के सहयोग से।